उत्तराखण्ड की रामलीला का संगीतिक पक्ष

डॉ.पंकज उप्रेती
एसि0 प्रोफेसर, विभाग प्रभारी संगीत
रा0स्नातकोत्तर महाविद्यालय बेरीनाग (पिथौरागढ़) उत्तराखण्ड
Email- editorpighaltahimalay@gmail.com

विश्व रंगमंच पर राम के चरित्र को लेकर अनगिनत नाट्य खेले जाते रहे हैं। वर्षों के काल क्रम बीतने पर भी विद्वानों ने नायक के रूप में राम को स्वीकारा है। इन्हीं की देन है– राम काव्य परम्परा तथा इसके आदिकवि हैं– वाल्मीकि। वेद–पुराणों में रामकथा के बीज देखने को मिलते हैं।

कल्याण के श्रीराम भक्ति अंक में रामकाव्यों का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि भगवान श्रीराम जैसे स्थावन–जंगमात्मक जगत् में सर्वत्र व्याप्त हैं, वैसे ही रामचरित्र भी किसी न किसी रूप में सर्वत्र प्रसिद्ध है। रामचिरत्र के विषय में आर्ष ग्रन्थ के रूप में श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, आध्यात्म रामायण, आनन्द रामायण, अद्भुत रामायण, भुशण्डिरामायण, श्रीरामचरित मानस आदि कतिपय ग्रन्थ सर्वाधिक मान्य हैं। इसके साथ ही विभिन्न पुराणों में, विभिन्न सम्प्रदायों में तथा विभिन्न भाषाओं में रामकथा का निरूपण बड़े समारोह से हुआ है।[1] राम काव्य को लोकनाट्य के रूप में ऐसी मान्यता मिली कि जन–जन मर्यादापुरुषोत्तम की लीला मंचन करने और देखने में विश्वास करता है। रामलीला के रूप में इसका जगह–जगह मंचन होता है।

लोकनाट्य के रूप में रामलीला और इसके संगीत पर चर्चा करने से पूर्व रामकथा के प्रारम्भिक रूप के विषय में जानना आवश्यक है। वैदिक साहित्य में अनेक व्यक्ति, जिनका चरित्र रामायण में वर्णित है, उनका निर्देश उपलब्ध होता है। इक्ष्वाकुवा निर्देश ऋगवेद संहिता में यह मिलता है– जिस जनपद के इक्ष्वाकु राजा है, उनके रक्षा स्वरूप कर्म में वह प्रदेश बढ़ता है।[2] अर्थवेद में भी इक्ष्वाकु के नाम का उल्लेख मिलता है– औषधे! जिस प्रसिद्ध प्राचीन इक्ष्वाकु राजा ने तुम्हें सभी व्याधियों के नाश के रूप में जाना।[3] 'मन्त्ररामायण' नामक नामक ग्रन्थ जो पं.नीलकण्ठ ने लगभग चार सौ वर्ष पूर्व लिखा है, में ऋगवेद के मन्त्रों से रामायण कथा निकाली है। सायण आदि भाष्यों में यह अर्थ उपलब्ध नहीं है। इसका कारण यह है कि भाष्यकारों ने मन्त्रों का भाष्य यज्ञ–परक किया है। वेदों के अनेक अर्थ होते हैं। अतः इतिहासपरक नीलकण्ठ का भाष्य भी उपयुक्त है। जब रामायण को वेद का अवतार माना जाता है, तब मन्त्रों का रामपरक भाष्य निर्मूल है।[4] ऋगवेद की ऋचा में रामायण का उल्लेख करते हुए बताया गया है कि भगवान राम–सीता के साथ तपोवन में आये। दूसरे चरण में बताया गया है कि राम और लक्ष्मण पीछे रावण छिपकर सीता के पास आया और उसने उनका हरण कर लिया। तीसरे चरण में यह बताया गया है कि हनुमान ने लंका में आग लगा दी और चौथे चरण में कहा गया है कि रावण युद्ध के लिये राम के सम्मुख आ गया।[5] दशरथ का उल्लेख भी ऋगवेद में मिलता है– 'लाल रंग और भूरे रंग के दशरथ के चालीस घोड़े एक हजार घोड़ों के दल का नेतृत्व करते हैं।[6] शतपथ ब्राह्मण में कैकेय का उल्लेख इस रूप में है– 'उन्होंने कहा कि ये अश्वपति कैकेय इस समय वैश्वानर को जातने हैं।'[7] जनक का उल्लेख शतपथ ब्राह्मण में बहुधा हुआ है। ब्रहम्पुराण में रामकथा के अंश सर्वत्र बिखरे पड़े हैं। अठारह पुराणों के गणनाक्रम में ब्रह्मपुराण की गणना सबसे पहले होती है, इसलिये इसे आदि पुराण भी कहा जाता है। देवताओं व दानवों के युद्ध में कोई निर्णय न हो पाने की स्थिति में आकाशवाणी होती है कि जिस पक्ष की ओर से राजा दशरथ लड़ेंगे, उसी की विजय होगी।[8] पद्मपुराण में रामकथा का उल्लेख कई बार हुआ है। इसके सृष्टि खण्ड में भगवान की वनयात्रा, तीर्थयात्रा तथा पुष्कर में श्राद्धादि

का वर्णन है। उत्तरखण्ड में 242 अध्याय से 246 अध्याय तक रामकथा पूरी कह दी गयी है।[9] महापुराणों के गणनाक्रम में शिव पुराण चौथे स्थान पर परिगणित है। इसमें श्रीराम की कथा कई स्थानों पर आयी है। एक उदाहरण प्रस्तुत है– रावण द्वारा सीता के हरण के बाद राम–लक्ष्मण जब सीता की खोज में निकलते हैं, उस समय शिव अपने आराध्य श्रीराम को देखते हैं और कहते हैं, ये मनुष्य नहीं साधुओं की रक्षा तथा हमारे कल्याण के लिये स्वयं परब्रह्म के रूप में अवतरित हुए है, इनके छोटे भाई लक्ष्मण शेषावतार हैं।[10]

यद्यपि वेद पुराण में रामकथा के कई कथासूत्र मिलते हैं तथापि महर्षि बाल्मिकी ने रामायण काव्य में राम के सम्पूर्ण जीवन पर पहली बार प्रकाश डालते हुए संसार को राम–कथा महाकाव्य के रूप में अमूल्य निधि दी। भारतीय रामकाव्य के विकास में रामायण के पश्चात कई अन्य रामकाव्यों का उल्लेख मिलता है, उनमें आध्यात्म रामायण प्रमुख है। इसके अतिरिक्त अनेक रामायणों का योगदान रामकाव्य में है। जैसे– लोमेश रामायण, मन्जुल रामायण, सौहार्द रामायण, श्रवण रामायण, दुरन्त रामायण, देव रामायण इत्यादि परन्तु 'श्रीमद्भागवत' में श्रीराम के चरित्र का संक्षेप वर्णन होते हुए भी लालित्यपूर्ण है। इसके नवम् स्कन्ध में कहा गया है कि जिन्होंने भगवान राम का दर्शन और स्पर्श किया, उनका अनुगमन किया, वे सब तथा कौशलादेश के निवासी भी उसी लोक में गये, जहाँ बड़े–बड़े योगी योग साधना द्वारा जाते हैं।[11] रामकाव्य की इस धारा में तुलसीदास ने जो अद्भुत कार्य किया वह गेय रूप में अमर है। रामचरित पर तुलसीदास का मंतव्य है कि कवितारूपी मुक्तमणियों को युक्ति से बेधकर फिर रामचरित रूपी सुन्दर तागे में पिरोकर सज्जन लोग अपने निर्मल हृदय में धारण करते हैं, जिससे अत्यन्त अनुराग रूपी शोभा होती है, वे अत्यन्त आनन्द को प्राप्त करते हैं।[12] काव्य के बाद मर्यादापुरुषोत्तम राम के चरित्र को लेकर नाट्य रूप में इसका प्रस्तुतिकरण भी होने लगा। इसी क्रम में उत्तराखण्ड की रामलीला है। जिसका मंचन गेय नाट्य के रूप में होता है। पहाड़ की रामलीला का सबसे महत्वपूर्ण अंग इसका संगीत ही है। इसीलिये सबसे अधिक ध्यान गेयता पर ही दिया जाता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत का इसमें गहरा प्रभाव है। कई शास्त्रीय रागों की बहुलता इसके गीतों में दिखाई देती है। जैसे– बिलावल, पीलू, देश, विहाग, जयजयवन्ती, भैरवी, झिंझोटी, मालकोंस आदि। मंचन के दौरान सम्वादों में प्रभावोत्पादकता लाने के लिये पात्र सस्वर मानस की चौपाईयों का पाठ भी करते हैं। तुलसीदास की चौपाईयों के साथ सम्वादों में प्राचीन कवित्त, सवैया आदि छन्दों, राधेश्याम की रामायण के उद्धरणों तथा नौटंकी शैली की लोकप्रिय धुन 'बहरे तवील' भी सुनने को मिलती है।

उत्तराखण्ड में गीतनाट्य रामलीला का शुभारम्भ अल्मोड़ा नगर से माना जाता है। इसका शुभारम्भ 18वीं सदी के अन्तिम भाग में कुमाऊँ की राजधानी अल्मोड़ा में हुआ।[13] राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के उदीयमान कलाकार स्व.प्रगति साह ने अपने शोध प्रबन्ध में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के प्रवक्ता स्व. मोहन उप्रेती की रिपोर्ट का उल्लेख करते हुए बताया था– ''सन् 1886 में अल्मोड़ा के श्री देवीदत्त जोशी ने पहले पहल रामलीला का प्रस्तुतीकरण गेयनाटक के रूप में किया। पहले अल्मोड़ा में केवल दशहरे के ही दिन राम जुलूस निकलता था और खुले मैदान में रावण का पुतला जलाते थे। सम्भव है कि श्री जोशी ने उत्तर भारत में रामलीला प्रदर्शनों की लोकप्रियता को देखकर स्वयं राम भक्त होने के नाते अपने निवास स्थान अल्मोड़ा में भी उसे आरम्भ करने का निश्चय किया हो और यह भी सम्भव है कि गेय शैली में प्रस्तुत करने की प्रेरणा उन्हें अपने संगीत प्रेम के कारण मिली होगी। अल्मोड़ा से प्रारम्भ हुई उनकी यह गेय रामलीला शीघ्र ही समूचे कुमाऊँ–गढ़वाल क्षेत्र में दशहरे के उत्सव का प्रमुख आकर्षण का केन्द्र बन गई।''[14] कुमाऊँ की सर्वप्रथम रामलीला के बारे में मतभेद हैं किन्तु सन् 1860 में प्रथम बार अल्मोड़ा में रामलीला के पक्ष में अधिक लोगों का मत है। वर्तमान में सम्पूर्ण उत्तराखण्ड में लोकनाट्य के रूप में जो रामलीला मंचन होता है उसका मूल स्वरूप इसके कर्णप्रिय गीत–संगीत को

लेकर है। राम सेना और रावण सेना के पात्रों के मुंह से विभिन्न राग–तालों में जिस प्रकार गीत, चौपाई, छन्द, सम्वाद सुनाई देते हैं वह लोकनाट्य होते हुए भी शास्त्रीय पक्ष को अपने में समेटे हुए है। प्रस्तुत हैं उत्तराखण्ड में मंचित होने वाली रामलीला के कतिपय गीत–

यमनकल्याण – सीता रावण से–

अरे रावण तू धमकी दिखाता किसे,
मुझे मरने का खौफो खतर ही नहीं।
मुझे मारेगा क्या अपनी खैर मना,
तुझे होने की अपनी खबर ही नहीं।।
तू जो सोने की लंका का मान करे,
मेरे आगे वह मिट्टी का घर ही नहीं।
मेरे दिल का सुमेरू डिगे वो कहाँ,
मेरे मन में किसी का डर ही नहीं।।

उक्त गीत को कई बार 'बहरे तवील' नौटंकी की धुन में भी सुना जाता है परन्तु अभ्यास के लिये दीपचन्दी ताल में इसे यमन में पिरोया है और गाया जाता है।

भैरवी – राग भैरवी में कई गीत रामलीला नाट्य मंचन में सुनने को मिलते हैं। उदाहरण के लिये राम–कौशल्या सम्वाद का यह गीत प्रस्तुत है, जो कहरवा ताल में है–

आज पिता ने वनों का राज हमे दीन्हा।
पिता वचन नहिं टालना, यही हमारा काम।।
बरस चौदह वन जाइके पुनः मिलेंगे आय।
करो तुम पत्थर का सीना, वनों का राज हमें दीना।।

राग भैरवी का एक और गीत भी प्रस्तुत है जो वन जाने से पूर्व राम माता कौशल्या को समझाते हुए कह रहे हैं–

क्यों तू रुदन मचावे जननी, आँसू थाम–थाम–थाम।
नहिं दोषु मातु का माता, लिख दिया था यही विधाता।
अब क्या हाथ मले से आता, है विधि बाम–बाम–बाम।
लिखते हैं वेद अरु गीता, सब झूठी जग की रीत।
सदा रहा है नहिं कोई जीता, है एक नाम–नाम–नाम।

सिन्धभैरवी ताल दादरा का एक गीत प्रस्तुत है जिसे मन्थरा द्वारा गाया जाता है। मन्थरा रानी कैकयी को राम के विरुद्ध भड़काते हुए कहती है–

क्यों तुम हो भूल बैठी सुनिये हो राजरानी।।
कल राम राज पावें, राजा ने मन में ठानी।
संकट भरत को होगा, नहिं पावे राजधानी।।

इसी प्रकार सिन्ध भैरवी में एक और उदाहरण प्रस्तुत है जब बालक राम–लक्ष्मण वाटिका में भ्रमण करते हैं तो लक्ष्मण सीता को देख राम से कहते हैं–

देखो जी देखो महाराज यह ललनी।
संग सखी मिल मंगल गावें,

सिर पर सोहे देखो ताज यह ललनी।।
ललित मधुर चितवन अति नीकी,
फिरत है कौन से काज यह ललनी।।

खमाज – रामलीला की चौपाईयों में खमाज राग का प्रभाव है। एक उदाहरण (राग खमाज ताल विलम्बित कहरवा) प्रस्तुत है जब जनक दरवार में गुरु विश्वामित्र अचानक आ जाते हैं। दशरथ पूछते हैं–

केहि कारण आगमन तुम्हारा। कहहु सो करत न लाउब बारा।
कृपा करहु मोहिं देहु बताई। कीन्ह पवित्र मोर गृह आई।

राम तर्ज के अलावा राक्षसी तर्ज भी गीतों के उदाहरण हैं। वन में राम–लक्ष्मण को देख ताड़िका कहती है–

बिलावल, ताल– कहरुवा

रे नृप बालक काल ग्रसाये। क्यों तुम सन्मुख मेरे आये।
जिनके आये करन सहाई। ते डरपोक विप्र मुनि राई।।

बिलावल में एक अन्य उदाहरण प्रस्तुत है जब सूर्पनखा राम–लक्ष्मण को वन में अकेला पाकर रिझाती है–

प्रभु जी हमें वर लेओ, हमें वर लेओ।
एक तो मैं नीकी नार, हमें वर लेओ।
एक तो मैं बाली मैं बाली, मैं भोली मैं भोली।
दूजे भाई दसशीश, हमें वर लेओ।
दूजे मस्त जवानी, हमें वर लेओ।

गारा – विभीषण रावण को सझाते हुए कहते हैं राम से युद्ध मत करो–

मेरी मानो कहुँ भईया, वे तो हैं रघुवीर।।
मैं तुमसे कहूँ समुझाई, चित्त करके सुनो मम भाई,
पर नारी न लावो चुराई, तुम तो हो रणधीर।।
उस कुमति बसी विपरीती, ताते तुम करहु अनीती,
हित अनहित मानत प्रीती, सुनिये हो अति धीर।।

मांड – धनुषयज्ञ के समय जब रावण अभिमान के साथ सम्वाद करता है तब बाणासुर कहता है–

वृथा अभिमान क्यों करता अरे रावण सभा के बीच।
नहीं शिव धनु पुराना है, बनाया बज्र विधाता ने,
लिये पहचान भगवत को पिता बलिदान दिया उनको।।

इसी प्रकार वनवास के समय सीता जी कहती हैं। मांड–

पड़ी है धूप गरमी से,
लगी है प्यास अति भारी।
कहीं छाया नहीं दीखे,
मैं चलती नाथ अब हारी।।

झिंझोटी – राम–लक्ष्मण को वन में देख सूर्पणखा मुग्ध हो जाती है और लक्ष्मण से झिंझोटी के स्वरों में गाती हुए कहती है–

मैं तो छोड़ आयी लंका का राज,
लखन लाल तेरे लिये।।
भाई भी छोड़ा मैंने, बहिना भी छोड़ी,

छोड़ आयी सारा परिवार, लखन लाल तेरे लिये।।
बाग भी छोड़ा, बगीचा भी छोड़ा
छोड़ आयी सारा संसार, लखन लाल तेरे लिये।।

तिलककामोद – लक्ष्मण–परशुराम सम्वाद में यह गीत है–

लक्ष्मण परशुराम से– पिनाक पुराना, काहे रिस होत।।
ऐसे धनुष बहुत हम तोड़े, कबहुँ न क्रोध नहिं कीन्हा।
या में ममता है केहि कारण, जो देखत भृगुनाथ रिसाना।।
बार–बार मोहे परशु दिखाकर, क्यों करते अभिमाना।
जो कायर तुम मिले मुनि जी, उन्हीं को तुम जा धमकाना।।

इस प्रकार कई राग–रागनियों, मिश्रित रागों, धुनों में रची–बसी उत्तराखण्ड का रामलीला नाटक अद्‌भुत है। ग्यारह दिनों तक रामलीला मंचन में जब गेयता चढ़ती जाती है तो श्रोता मुग्ध हो जाता है।

सन्दर्भ–

1. कल्याण– श्रीरामभक्ति अंक, जनवरी 1994, पृष्ठ– 203
2. ''यस्ये क्ष्वाकुरूप व्रते रेवान् मराप्येध्ते''– ऋगवेद 10/60/4
3. ''त्वा वेद पूर्व इक्ष्वाको यम्''– अर्थवेद 19/39/9
4. कल्याण– श्रीरामभक्ति अंक, जनवरी 1994, पृष्ठ– 203
5. भद्रो भद्रया सचमान आगात् स्वसारं जारो अभ्येति पश्चात्।
   सुप्रकेतैर्धुभिरग्निर्वितिष्ठान् रुशाद्‌भिर्वर्णांरभि रामस्थात्।।
   –ऋगवेद 10/3/3
6. ''चत्वारिंशद् दशरथस्य शोणाः सहस्त्रस्याग्रेश्रेणिं नयन्ति''– ऋगवेद 1/26/4
7. ''ते होतुः अश्वपतिर्वा अयम् कैकेयः सम्प्रति वैश्वानरं वेद''– शतपथ ब्राह्मण 10/6/1–2
8. ''येषां दशरथो राजा ते जेतारो न चेतरे।।'' –ब्रह्मपुराण, 123/5
9. कल्याण– श्रीराम अंक, जनवरी 1994, पृष्ठ– 235
10. रामलक्ष्मणनामो भ्रातरौ वीरसम्मतौ।
    सूर्यवंशोद्‌भवौ देवि प्राज्ञौ दशरथात्मजौ।।
    गौरवर्णो लघुर्बन्धुः शेषांशो लक्ष्मणाभिधः।
    ज्येष्ठो रामाभिधो विष्णुः पूर्वाशो निरुमद्रवः।।
    अवतीर्णः क्षितौ साधुरक्षणाय भवाय नः। –शिवपुराण, सती 25/38–40
11. ''स यैः स्पृष्टो भिदृष्टो वा संविष्टो नुगतोदपि वा।
    कोसलास्ते ययुः स्थानं यत्र गच्छन्ति योगिनः।।''
    –श्रीमद्‌भागवत 9/11/22
12. ''जुगुति बेधि पुनि पोहिअहिं रामचरित नर ताग।
    पहिरहिं सज्जन विमल उर शोभा अति अनुराग।।''
    –रामचरित मानस, बालकाण्ड, दोहा– 11
13. कुमाऊँ की रामलीला : अध्ययन एवं स्वरांकन, डॉ.पंकज उप्रेती, पिघलता हिमालय प्रकाशन हल्द्वानी, जिला नैनीताल, उत्तराखण्ड, भारत। सन् 2008, प्रथम संस्करण। पृष्ठ– 10
14. अल्मोड़ा की पारम्परिक गेय रामलीला, शोध प्रबन्ध, प्रगति साह, पृष्ठ–13